Course – BA Education Hons; Part III
Paper – VI (Educational Guidance & curriculum construction)
Topic – Concept & scope of Guidance
Prepared by – Dr Sangeeta Kumari

इकाई 1 : निर्देशन की अवधारणा एवं क्षेत्र
Unit 1 : Concept & Scope of Guidance

1.1 निर्देशन की अवधारणा (Concept of Guidance):-

निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके आधार पर किसी एक अथवा अन्य व्यक्तियों को किसी न किसी प्रकार सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता के आधार पर समस्याओं के संबंध में विवेकयुक्त निष्कर्ष निकालने, वांछित निर्णय लेने तथा अपने लक्ष्यों, उद्देश्यों को प्राप्त करने में सुगमता होती है। निर्देशन के आधार पर व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, सीमाओं तथा व्यक्तित्व से संबंधित विशेषताओं का ज्ञान होता है तथा वह स्वयं में निहित विशेषताओं का समुचित उपयोग करने में सक्षम हो पाता है। निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है, वरन् इसके आधार पर व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने में स्वयं ही सक्षम हो सके।

शर्ले हैमरिन (Shirley Hamrin) के शब्दों में
"व्यक्ति के स्वयं के पहचानने में इस प्रकार सहायता प्रदान करना, जिससे वह अपने जीवन में आगे बढ़ सके।

Scanned with CamScanner

लैस्टर डी० क्रो (Laster D. Crow and Alice Crow) के अनुसार,

" निर्देशन से तात्पर्य, निर्देशन के लिए स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा निर्णय कर देना नहीं है और न ही दूसरे के जीवन का बोझ होना है। इसके विपरीत योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा, दूसरे व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का हो, अपनी जीवन क्रियाओं को स्वयं गठित करने, अपने निजी दृष्टिकोण विकसित करने, अपने निर्णय स्वयं लेने सकने तथा अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता, करना ही वास्तविक निर्देशन है।

आर्थर जे० जॉन्स के शब्दों में

" निर्देशन एक प्रकार की सहायता है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को उसके समक्ष आए विकल्पों के चयन, समायोजन एवं समस्याओं के समाधान के प्रति सहायक होता है। यह निर्देशन प्राप्त करने वाले व्यक्ति में स्वाधीनता की प्रवृत्ति एवं अपने उत्तरदायी बनने की योग्यता में वृद्धि लाती है। यह विद्यालय अथवा परिवार की परिधि में आबद्ध न रहकर एक सार्वभौम सेवा का रूप धारण कर लेती है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यथा, परिवार, व्यापार एवं उद्योग, सरकार, सामाजिक जीवन, अस्पताल व कारागृहों में व्यक्त होती है। वस्तुतः निर्देशन का क्षेत्र, प्रत्येक ऐसी परिस्थिति में विद्यमान होता है जहाँ उस प्रकार के व्यक्ति हों, जिन्हें सहायता की आवश्यकता हो और जहाँ सहायता प्रदान करने की योग्यता रखने वाले व्यक्ति हों।"

Scanned with CamScanner

स्ट्रप एवं लिण्डक्विस्ट के अनुसार,

"निर्देशन व्यक्ति के अपने लिए एवं समाज के लिए अधिकतम लाभदायक दिशा में उसकी सम्भावित, अधिकतम क्षमता तक विकास में सहायता तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।"

1.2 निर्देशन के क्षेत्र (Scope of Guidance):- व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार की समस्या का होना स्वाभाविक है। इन समस्याओं का समाधान किए बिना प्रगति पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना नितान्त असम्भव है। कोई भी व्यक्ति जिस क्षण इन समस्याओं का समाधान करने की दिशा में हतोत्साहित हो जाता है, उसी क्षण उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। इस दृष्टि से समस्या समाधान की क्षमता का विकास कितना अधिक महत्वपूर्ण है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति में इस क्षमता का विकास करने में सर्वाधिक सहायक है। शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में निर्देशन प्रक्रिया का उपयोग अनेक प्रकार से किया जाता है जैसे- (1) वांछित पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों का चयन करने में (2) पाठ्यसहगामी क्रियाओं के चयन हेतु (3) नवीन पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में निर्णय लेने में (4) अधिगम प्रक्रिया के निरन्तर, अपेक्षित उपलब्धि स्तर बनाए रखने की दृष्टि से (5) राष्ट्रीय एकता पर आधारित कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित करने की दृष्टि से (6) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान करने के लिए (7) प्रौढ़ शिक्षा पर आधारित कार्यक्रमों की दिशा में प्रेरित करने हेतु आदि।

Scanned with CamScanner

1.3 निर्देशन की विशेषताएँ (characteristics of Guidance).

(1) निर्देशन जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होता है। शिक्षण की भाँति निर्देशन भी विकास की प्रक्रिया है।

(2) निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति अपने निर्णय स्वयं ले सकने में सक्षम बनाना है तथा अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता प्रदान करना है।

(3) इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को, ~~अपनी~~ उसकी समस्याओं एवं समायोजन के विकल्पों के चयन में सहायक होता है।

(4) प्रत्येक शिक्षक को चाहिए कि वह अपने छात्र की रुचियों, योग्यताओं एवं क्षमताओं को समझकर उनके अनुकूल सीखने की परिस्थितियों को प्रस्तुत करे जिससे उनकी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हो सके।

(5) निर्देशन में छात्रों की वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशन को अनुकूलित करने में सहायता प्रदान करती है।

(6) प्रभावशाली शिक्षण एवं अनुदेशन में निर्देशन प्रक्रिया निहित होती है। कुशलतापूर्ण निर्देशन के अभाव में शिक्षण प्रक्रिया अपूर्ण होती है।

(7) निर्देशन व्यक्ति की जन्मजात योग्यताओं व शक्तियों तथा प्रशिक्षण से अनेक कौशलों को संरक्षित रखने का मूल प्रयास है।

(8) निर्देशन, शिक्षा प्रक्रिया की वह अवस्था है जिसमें छात्र को उसकी योग्यताओं एवं क्षमता के अनुरूप अध्ययन पाठ्यक्रमों के चयन में तथा रोजगार के चयन में सहायता प्रदान करता है।

1.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1) Define Guidance. Describe the characteristics of Guidance.

Scanned with CamScanner